



Hargharpanditji

॥ श्री षट्तिला एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री षट्तिला एकादशी व्रत कथा ॥

षट्तिला एकादशी माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है। "षट्" अर्थात् छह और "तिल" अर्थात् तिल (तिल के बीज)। इस दिन तिल का छह प्रकार से प्रयोग—स्नान, उबटन, हवन, तर्पण, दान और भोजन—विशेष पुण्यदायक माना गया है। यह व्रत पापों का नाश करने वाला, दरिद्रता दूर करने वाला तथा भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा प्रदान करने वाला माना जाता है।

श्री षट्तिला एकादशी व्रत कथा

प्राचीन काल में पृथ्वी पर एक अत्यंत धार्मिक ब्राह्मणी रहती थी। वह भगवान श्रीविष्णु की परम भक्त थी। वह नियमित रूप से व्रत, जप, तप और पूजा करती थी तथा अपने शरीर को कठोर तपस्या से क्षीण कर चुकी थी।

यद्यपि वह अनेक प्रकार के व्रत करती थी और भगवान की आराधना में सदैव लगी रहती थी, किन्तु उसने कभी भी भूखे, निर्धनों या ब्राह्मणों को अन्न का दान नहीं किया। वह वस्त्र, धन और अन्य वस्तुओं का दान तो करती थी, परन्तु अन्नदान का महत्व नहीं समझती थी।

भगवान श्रीहरि ने उसकी परीक्षा लेने का विचार किया। वे एक दिन साधु का वेश धारण करके उसके द्वार पर पहुँचे और बोले—

"भिक्षां देहि, मातः!"

ब्राह्मणी ने बिना कुछ विचार किए एक मिट्टी का ढेला उठाकर साधु के पात्र में डाल दिया।

भगवान विष्णु वहाँ से चले गए।

कुछ समय बाद जब उस ब्राह्मणी का देहांत हुआ, तब उसे स्वर्ग में एक अत्यंत सुंदर भवन प्राप्त हुआ, किन्तु उसमें न अन्न था, न धन, न अन्य कोई सामग्री। वह भूखी-प्यासी रहने लगी।

वह भगवान विष्णु के पास पहुँची और बोली—

"हे प्रभु! मैंने जीवनभर आपकी भक्ति की, अनेक व्रत किए, फिर भी मेरे भवन में अन्न का अभाव क्यों है?"

भगवान श्रीहरि ने कहा—

"हे देवी! तुमने कभी अन्नदान नहीं किया। जो मिट्टी का ढेला तुमने मुझे भिक्षा में दिया था, उसी के फलस्वरूप तुम्हें केवल भवन प्राप्त हुआ, किन्तु अन्न नहीं मिला।"

ब्राह्मणी ने अपनी भूल स्वीकार की और भगवान से उपाय पूछा।

भगवान विष्णु बोले—

"जब देवांगनाएँ तुम्हारे भवन पर आएँ, तब उनसे षट्तिला एकादशी व्रत की महिमा पूछना। जब तक वे कथा न सुनाएँ, द्वार मत खोलना।" कुछ समय बाद देवांगनाएँ वहाँ आईं। ब्राह्मणी ने उनसे षट्तिला एकादशी व्रत का महत्व सुनाने का आग्रह किया। पहले तो वे संकोच करने लगीं, किन्तु अंततः उन्होंने इस पवित्र व्रत की महिमा, तिलदान, अन्नदान तथा भगवान विष्णु की आराधना का महत्व विस्तार से बताया।

कथा सुनने के बाद ब्राह्मणी ने श्रद्धापूर्वक षट्तिला एकादशी का व्रत किया। उसने तिल से स्नान किया, तिल का उबटन लगाया, तिल से हवन किया, तिल का तर्पण किया, तिल और अन्न का दान किया तथा भगवान श्रीहरि की विधिपूर्वक पूजा की।

इस व्रत के प्रभाव से उसका भवन अन्न, धन, रत्न, वस्त्र और समस्त सुख-संपत्तियों से भर गया। उसके सभी कष्ट दूर हो गए और अंत में उसे भगवान विष्णु के परमधाम की प्राप्ति हुई।

कथा का संदेश

केवल उपवास और तपस्या ही पर्याप्त नहीं, दान भी आवश्यक है। विशेष रूप से अन्नदान और तिलदान का अत्यंत महत्व है। षट्तिला एकादशी का व्रत करने से पापों का नाश होता है।

दरिद्रता, दुःख और अभाव दूर होकर घर में सुख-समृद्धि आती है।
भगवान विष्णु अपने भक्तों पर सदैव कृपा करते हैं, किन्तु दया, सेवा और
दान से ही भक्ति पूर्ण होती है।

षट्तिला एकादशी में तिल के छह प्रयोग (षट्तिल)

तिल मिश्रित जल से स्नान।

तिल का उबटन लगाना।

तिल से हवन करना।

तिल से पितरों का तर्पण करना।

तिल का दान करना।

तिल युक्त भोजन ग्रहण करना (द्वादशी पारण के पश्चात)।

व्रत का फल

जो श्रद्धा और विधिपूर्वक षट्तिला एकादशी का व्रत करता है, तिल एवं
अन्न का दान करता है तथा भगवान श्रीविष्णु का पूजन करता है, उसके
समस्त पाप नष्ट होते हैं, पितरों की कृपा प्राप्त होती है, धन-धान्य की
वृद्धि होती है और अंततः उसे भगवान विष्णु के परमधाम की प्राप्ति होती
है।

॥ श्री षट्तिला एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥